

ASHA ARCHIVES

3272



ॐ नमः श्री कृष्णाय ॥ अथ स्नानविधिः ॥ नासिय ३ ॥ उं जं फाय
रुद्रादिक नमः उंग न्यासः ॥ गिराव न्धनं ॥ उं न क सूर्य दग व द्म
न विष्णु गिराव न्धनं ॥ कृष्ण नाम स ह मा हि कं ग व न्ध क नो म्य हं ॥
उं जी पीं कुं सौ वं कृष्ण विव क य ॥ ल गिराव न्ध क न २ हं रुद्र
स्वाहा ॥ ॥ लेख का या ३ ॥ संकल या य ॥ अथ का य य ॥ ग ग ग ग
संकल या य क य काम नार्थ निष्प स्नान म हं क निष्ठा ॥ जल ग य न ॥

लेख स त्रिका ष वा क था य ॥ अं कृष्ण मूडान तीर्थ जा वा रु न का धि कं
मा त्म मूडान ता क य या ३ ॥ लं वं नं यं हं सं ॥ ३ ॥ धन मूडान
उ ग य दि ग्व न्धनं ॥ ॥ धानि मूडान मूल म नु वा ना ३ ॥ गिराव न्ध
न हा य धन ३ ॥ उं गु ती स डी लिंग स पी नो रि स ड्रुं द द य स हं नि
न सा ॥ ॥ रवाल सिय लेखे न ल य ॥ अथ विय ॥ ॥ उं जं हं २ सं २ थं
कृष्ण का य जं नमः ॥ ३ ॥ मूल ऊ य ॥ १० ॥ नासिय ३ ॥ व मुा दिल

खनहाय ॥ रुद्र ॥ मरुतयधडागिहल ॥ वृत्तिज्ञानविधि ॥ शुभ ॥ ॥
अथ विरुतिधन ॥ नासिय ३ ॥ गद्यपुत्रमूलनमस्कान ॥ प्राधया
म ॥ न्यास ४ ॥ ॥ विरुतिकार्य लखाचसपालमगय ॥ लखतयवृ
धक ॥ प्राय ॥ उंजींभींभूँ श्रीं हं रे कल २ कृत्तिक हं रुद्र स्वाहा ॥ उंजीं
धवाय दथसहं रे स ३ ॥ वाय विरुतिधन जांजींभूँ वाय ॥ ककय
मूडानगाकथायाडा ॥ अधन ॥ उंजींभींभूँ नभारगवतिभूँ श्रीं महमा
३

यनवात्मा कृत्तिकधनी उंलाखं भाहय २ मह विरुतिधनं क्रीं कि वि २ वि
महारसममानि विजृंभय दायिनिमानि २ ममभर्तृरुद्र २ हं हं रुद्र
स्वाहा श्रीं जीं ॥ ३ ॥ विरुत्तनतिय ॥ उंजींभींभूँ श्रीं वृंभूँ कि कृत्ति
कार्ये स्वाहा श्रीं भूँ श्रीं जीं ॥ मूलनथाहरतय ॥ ३ ॥ तयधयाय ॥ उं
हं रे स ३ ॥ उंजींभींभूँ कृत्तिकधनी कृत्तिकधनी रुद्रानकधीपाडकारिपया
मिनम ४ ॥ ३ ॥ मूलजयधन १० ॥ जय समर्थनी ॥ उं रुद्र उं पंगुहाध

स्वाहा ॥ न्यासलिकाय ॥ आनिमूडानद्वयसथियक ॥ गाउउयल
थयकेरुट् ३धक ॥ संहानमूडाकन ॥ नासिय ३ ॥ कृगिविरुगित्त्रान ॥
जयलिंगमर्चनविधि ॥ नासिय ३ ॥ दवस्तानयाचकेचन्यनादिखल ॥
न्यासयाय ॥ ५४ जमूयट्ट ॥ जजिगुशोर्यानिम ४ ॥ जीनंजीनीयास्वाहा ॥
इमंभमायविषट् ॥ जेजोनोमिकायाइ ॥ जीकेनिष्टायाविषट् ॥ ५४ कन
तलयुष्टायाजमूयट्ट ॥ ॥ जहिदयायनम ४ ॥ जीमिनसस्वाहा ॥ इति

स्वायेवषट् ॥ जीकेवयायइ ॥ जीनंजुयायेविषट् ॥ ५४ जमूयट्ट ॥
जयासस्तानन ॥ जहिदयायनम ४ ॥ यादिइस्तानथमजकगतय ॥ जेचन्य
नाकृतयुष्यनम ४ ॥ धनमूडा ॥ गाउउयदिगभनरुट् ३धक ॥ धलखनद
वयुजारुत्रथमहाय ॥ ॥ धननगिय ॥ जालनचन्यननम ४ ॥ स्वार्नकय ॥
जालनययनम ४ ॥ सूर्ययुजा ॥ वरुयासनायनम ४ ॥ उयजलि ॥ वजोकी
स३ श्रीसूर्यायनम ४ ॥ ३ ॥ वंवलिंगुक्त २ स्वाहा ॥ ॥ नानायधयुजा ॥ वंन

जसनायनमः॥ उपाऊलि॥ उंजीं सं८ नमानात्राय धाय विष्णुत्मनः कीं
स्वाहा॥ ३॥ उंवलिंगुद्र २ स्वाहा॥ ॥ महादेवयूजा॥ उंवृषासनायनमः॥
वंतस्वांजकृतननं॥ उंजावाहनादिचन्दनाकृतयूषानमः॥ उंचन्दनं
नमः॥ धर्धसिन्दूरजकृतयूषधूपदीपनेत्रयश्चाय॥ उपाऊलि॥ उं
हंहीं सं८ धीसदागिवायनमः॥ ३॥ उंवलिंगुद्र २ स्वाहा॥ ॥ उपाऊलि॥ उं
जीं सं८॥ १०॥ कतना॥ उंजीं सं८॥ १०॥ कतना॥ उंहीं सं८॥ १०॥ कतनं॥ ॥

मधुलदयकस्तु॥ नमस्तुवनाधीश तनखजगत्त्रककादिननाथ
शिलाकेश तन्मसर्वसर्वदा॥ विष्णुं त्रिभुवनधाम तन्मनाथ उगत्पुत्र
नमामि गिततंदवदहिममनसपित॥ गिर्वगिवकर्त्रभक्तं गिवात्मानं
गिवारुमं॥ गिवमार्गयुधतार्त्रयुधमामिसदागिर्व॥ लिंगमर्चनविरोधत
त्सर्वयनिपूर्ध्वमस्तु॥ कतना॥ नमस्तुत्रयाय॥ ॥ स्नानकाया॥ उ॥ कृयम
धुलयागु॥ न्यासलिकाय॥ ॥ स्नानकाकाया॥ उ॥ कृयननुना॥ वाय॥

मुखवाद्य ॥ संस्तुतमूडाकना ॥ नासिय ३ ॥ कर्तिलिङ्गभर्जनविधि ॥ ४० ॥
अथ निर्याञ्जनविधि ॥ मालकागागलाचक ॥ धनस्वानक ताहाद्यसत
य ॥ नमः ४ धर्मस्य मूडानना कथाया ३ ॥ कुल ४ ॥ धनमूल धन ३ ॥
नासिय ॥ जां आत्मतत्वाय स्वाहा ॥ जीविद्यातत्वाय स्वाहा ॥ कृतिवर्तत्वा
य स्वाहा ॥ ॥ चतुर्त्वाकं अर्घ्यं सतया ३ ॥ सूर्याय याया निजं ३ ॥ जीसं ४ ॥ श्रीसु
र्याय अर्घ्यं नमः ४ ॥ स्वानतन ॥ ज्यैष्ठ्यं नमः ४ ॥ ॥ अर्घ्यं सलं खनय ॥ गु
द्य २

नमः कुलदयकयूजा ॥ ज्यैष्ठ्यं नमः ४ ॥ स्वानकाया ३ ॥ कृय ॥ ॥
आसनतय ॥ ज्यैष्ठ्यं नमः ४ ॥ वलिम ॥ ज्यैष्ठ्यं नमः ४ ॥ पाशुम
ज्यैष्ठ्यं नमः ४ ॥ थडात ॥ ॥ कजडाखडातन ॥ उज्जुमाय रुट् ॥
वज्रमकूटमूडानरवालस गिकाधवाय ॥ ज्यैष्ठ्यं रुट् वजय ३ ॥ ला स्वाहा ॥
दहाद्यानजुगुलिलानतय ॥ ज्यैष्ठ्यं नमः ४ ॥ कूलकूलमचन ॥ जी ३ ॥ रुट् स्वा
हा ॥ ॥ गधगुनमूलनमस्कानयाय ॥ ज्यैष्ठ्यं नमः ४ ॥ खवस ॥ ज्यै

गुणस्नानमः॥ उवस॥ जें ५ हं २ सं २ धीस्वयदवतायेनमः॥ दथुस॥
ताउगुयदिग्वन्धन॥ रुट ३ ॥ ॥ याधायाम॥ यं १६ उवतिय॥ नं ६४
नयांतिय॥ वं ३२ उवताउत॥ न्यासयाय॥ धननलाहातसवय॥ उं ३
मायरुट॥ कूं ३ गुष्ठायांनमः॥ कूं ३ नीत्यास्वाहा॥ लूं ३ मध्माया
वषट्॥ नं ३ नामिकायां दूं॥ यं ३ निष्ठायां वीषट्॥ उं ३ नगलपृष्ठा
यां ३ मायरुट॥ ॥ कूं ३ दयायनमः॥ कूं ३ धिनेसस्वाहा॥ लूं ३ धिस्वा

थेवषट्॥ नं ३ वचाय दूं॥ यं ३ नगुयाय वीषट्॥ उं ३ मायरुट॥ रुट ३
ददयासे॥ हं ३ धिस्वास्नाननमः॥ सं ३ धिनेस्नाननमः॥ कूं ३ ललाटेनमः॥
मं ३ श्वनमः॥ लं ३ दयायनमः॥ वं ३ नास्तिस्नाननमः॥ नं ३ गुष्ठास्नानन
मः॥ यं ३ जानूयांनमः॥ उं ३ यादूकथांनमः॥ ॥ मूलनसर्वगिसंधिय॥
अर्घ्यायूजा॥ स्नानतनमः॥ कां ३ दयायनमः॥ पादि ३ षष्ठगपूजा॥ धन
स्नानकतय॥ लूं ३ चन्दनाकतयूयांनमः॥ धनमूजाताउगुयदिग्वन्धन

रुट् ३॥ धर्लखनदवयूजालत्रथमहाय ॥ ॥ धर्लखयूजा ॥ आसन ॥ कींज
धनैकादिखानमः ॥ धर्लमसंसिलरुट् धर्क ॥ लखनयस्मै धर्क ॥ चग
नज्जकृतगयनमः ॥ धर्क ॥ अर्कमूडाननीधर्मावाहनकां धर्क ॥ ऊयनय ॥
उं ३॥ धर्लखमूडाता उग्रयदिग्वन्धनरुट् ३॥ धर्लखनदवयूजालत्रथमहा
य ॥ ॥ नीधर्माधन ॥ धर्लखज्ज्यालखनहायरुट् धर्क ॥ धालानदाय
रुट् ३॥ अवगुणन हू ॥ धनमूडाव ॥ ता उग्रयदिग्वन्धनरुट् ३॥ ॥

मत्स्यमूडानताकथायाडाधनयाय ॥ उं वां वीं वूं वैं वौं वं १५ वक्षायवि
माचिताये सुधादयोनमः ॥ ३॥ उं कीं कीं कीं कीं कीं कीं १५ सुधाकृष्ण
यं विमाचय २ अमृतं अवय २ स्वाहा ॥ ३॥ उं हं हं हं हं हं हं १५ हुकृष्णयवि
माचिताये सुधादयोनमः ॥ ३॥ उं जं मृगं २ अमृता हं वं जं मृगवक्षिनिज्
मृगं अवय २ अमृतं कृन् २ स्वाहा ॥ ३॥ मूलमनुधान ६॥ पूजा ॥ उं क्रीं क्रीं
मः ॥ ३॥ यानिमूडा ॥ ॥ नवाडाधन ॥ धर्लखज्ज्यालखनहायरुट्

ॐ नमः ॥ यं १० वं १० वं १० मूलमनु ३ ॥ धनमूडा ॥ स्नानतयनम ४ धर्क ॥ ॥
पाणयूजा ॥ आसन ॥ नंज मिमधुलायनम ४ ॥ पाणमसंसिलरुद्धक ॥ स्नान
पनयाडायाय ॥ अं सूर्यमधुलायनम ४ ॥ पाणसतीर्थधुद्विधन ॥ अं
जां श्रीं कुं क्षीं रुं रं श्री पाणयूनयामिनम ४ ॥ पूजा ॥ संभाममधुलायनम ४ ॥
गिकूट ॥ मूडाननिकाधवाय ॥ उं जां जीं कुं रुं स्वाहा ॥ स्नानतयन ॥ साहदया
यनम ४ आदि ६ षष्ठं ॥ धनस्वाकितय ॥ उंचन्यनाकृतयूर्यनम ४ ॥ मत्स्यामू

डानयायाडा ॥ ऊयमूलमनु धन १० ॥ अतगुष्ठन दूं ॥ धनयानिमूडा ॥
तागुगयदिग्वधनरुद्ध ३ ॥ ॥ अर्घयागुयास्नानकक्यमूडासतयाडा
रुतगुद्वियाया ॥ उं भानी सजीं गुं ससधीं नारिसकुं हदयसक्षीं धिन
सं ॥ क्षीं धिनसकुं हदयसधीं नारिसजीं गुं सस ॥ उंचाप्रसा ॥ ॥
अर्घयागुयालंरुं नथमहायाडा ॥ आत्मयूजायाय ॥ उं आत्मनचन्यनंन
म ४ ॥ धर्मासिन्दूरअकृतयूर्य ॥ धिनसगुयांजलिगय ॥ उं जीं श्रीं कुं क्षीं

पृवजान । हरिं वाणश्यामं कृष्णरुलकवनालीति खट्वांगशूलां च
 यं घृष्टाकेयालं रुकुतं गणिवनं वल्गुकीवा दयनीं ॥ मन्त्रं न विनिरास्य
 सिंहपृष्ठाया विष्टां कचरुननमितांगीमिद्वरुषारिनामां । अरुयवत्रद
 हस्तोभकवक्रागिनां । मयमूदितमखा ऊक्त्रि कांचित्कयामि ॥ त्रिंश
 नयूषीनमः ॥ ॥ आवाहनादिमूद्रा ॥ मूलध्रीकृत्रिकेधनकृत्रिकेधनी
 रुद्रानक ०० हागच्छ २ ०० हतिष्ठ २ ०० हसनिहिताहव २ ०० हसनिगूढा

रुव २ ममयूजा गृहाष्ट ॥ ॥ पाद्यादितय ॥ त्रंजगत्यार्चनमः ॥ त्रंजघार्घ
 स्वधा ॥ त्रं ०० दमाचमनीयं वं ॥ त्रं ०० दस्नानीयं स्वाहा ॥ ॥ त्रं च न्यर्जन
 मः ॥ त्रं सिन्दूरनमः ॥ त्रं न कचन्यर्जनमः ॥ त्रं ०० दमक्रतुनमः ॥ त्रंजग
 त्यर्थोषध ॥ ॥ घृष्टसचतस्वानतया उपायूजा ॥ त्रं गऊधनिमनुमातः
 नमः स्वाहा ॥ धूपलखनहाया उपायूजा ॥ त्रं धनमूल ३ धनमूद्रा ॥
 धूपथनघृष्टास्य ॥ त्रं ०० दधूपनमः ॥ ॥ दीपलखनहाया उपायूजा

[illegible]

सनयी० पी० भयपी० कृणायकृणसन्धायसन्धाहदिव्यसिद्धिसमयचक्र
भीयाइकायूजयामिवलिगृह २ स्वाहा ॥ उं उं कानूकयत्किंकिं नूतत्सर्व
उं हं दयायवेलिगृह २ स्वाहा ॥ विन्दु ॥ ॥ क्रापायाध्वचन्दनादिक्काय
धूपदीपनेवाद्यदेवर्कवलिसंकोय ॥ तर्पणायूनवाचमनीयतय
॥ ॥ ऊयमालाध्विअर्घ्यालारवनहायचतस्त्रानकतयपूजायाय ॥
उं ऊं ऊं क्रमालायेनमः ॥ ॥ कृणया ॥ क्रां १० वदकयावां १० गरुड

यागं १० ॥ ॥ मूलया ॥ उं ऊं मूं १० ॥ उग्रचक्रायाङ्कं १० ॥ सि
द्धिलक्ष्मीयाङ्कं १० ॥ सुन्दरीयाङ्कं १० ॥ सुन्दरीयाङ्कं १० ॥ सुन्दरीयाङ्कं १० ॥
नाटयनयाङ्कं १० ॥ सुन्दरीयाङ्कं १० ॥ सुन्दरीयाङ्कं १० ॥ सुन्दरीयाङ्कं १० ॥
उं हं दं ऊं पंगुहाहा स्वाहा ॥ ॥ मधुलदयर्ककागं १० ॥ उं गुन
यानेमः ॥ कृणुर्नवदकं १० ॥ गलार्णविद्युहानकं १० ॥ सुयूयविधिवद
क्रानमामिचन्द्रिदवकं ॥ उं कानासनमात्रुहा वज्रयधायनिस्त्रिग



ASHA ARCHIVES 3272



हैं ५ गुह्यातिगुह्य गोपित्वं गृहाण स्मत्कृते जपे ॥ सिद्धिर्भवतु मे त्रितयं त्वत्प्रादा महेश्वरि इदं जपं गृहाण स्वाहा

षट्पुकाजगतादिदीर्घीकृष्टिकानिमाम्यहं ॥ दीक्षाविद्वजसिकिलान
सबाधवत्या त्वेवदिगंयथमतानिनित्राऊयथा ॥ तीक्ष्णकटाकूनवथी
वनउरुसकं नामाचवयुथतलंगितिकधुनाथः ॥ आपदाध्विविगानकी
पत्रनिर्वाधदायिनी ॥ ३४ स्वयंयहना निर्यासिद्विलक्ष्मीनमाम्यहं ॥ पत्रमा
नन्दसन्धाह पुमाहुरुवनिरुनि ॥ ३४ स्वयंयपनिम्नानं वदनं पाहिमा
भिव ॥ रुस्मागंचन्दमालीकुजगपनिगलेरुषिर्गकीरिवासा नन्दीलम् ॥

नाद्यनास्थानठगिसहगखेर्नन्दिनादावसान। यादव्यासव्यमानाड
निरुयमुखं हनुर्वसिद्धिदाच सस्थीमानुसारवकुलवलयहनर्धर
ननार्थनमामि॥ जयनाठसहस्राधि। कियनहनिममया। दासाहमिनि
मांमत्वाक्रमस्वपत्रमध्वनी॥ जंजस्तनूनिगार्जनविधीतसर्वविधिय
त्रिपूर्वमम्भु॥ कननाडाथानिमूडाननमस्कात्रयाय॥ विन्दुविरय॥ ॥
दववल्लिथडागिनसकननाडाखानकाकाया॥ ननुनाडावल्लिसतया॥ ॥

खजर्घायालखनथमहाय॥ चनसिंधवननगिय॥ कननाडामधुलसंदव
स्काखानकाकासंकुय॥ ॥ न्यासलिकायद्रायायाथं॥ ॥ कयागसथूना
डाद्रसपियाडावल्लिसतय॥ ॥ ऊ४जमुयडू॥ थानिमूडानदवधियोडा
थडाददयसलीनयाय॥ ऊ४ददयायनम४॥ लादाय३॥ ऊ४जमुयडू॥
लथयक॥ रु४३॥ ॥ संहानमूडानवल्लिथय॥ दवयाखानकायाडा
ननुनाडावल्लिसतय॥ वल्लिसलखककुलतयाडाद्रायायाथंनसिय३

धनामधुल (थल) ॥ सूर्यसाक्षि ॥ उं ऊं कीं सं ४ कृतकर्मस्वसाक्षि ॥ धाडीसूर्या
 यजर्धनमः ॥ उं यं धं नमः ॥ ॥ थडा मानयया हातकादवयानामनकं ग
 लतनरुका ऊपयाय ॥ पाणकाया अविन्दविय ॥ वलिसक कुलगयाडान
 तुनाडावाय ॥ वंसयनकाडातियशकयय ॥ चन (लोदककाय) ॥ ॥
 वलिमनाडावाय ॥ वलिथालाहयूजा ॥ उं वां चि (धुधनायच (धुधनीभ
 किस्तिनायनमः ॥ ३ ॥ जय ॥ उं वां १० कगन ॥ दानसमधुल (थल) य

ऊ ॥ देवर्कमधुल (थल) यूजा ॥ अष्टांगिन दधुप्रक्षमयाय ॥ ॥ ॐ ति
 निव्याच्चनविधिसंयुक्त ॥ ॥ गुरुममु सर्वदा ॥ सम्पत् २४४ जिष्णु कर्त्तव्य राज

गीगाएकरनर्मदाच जैमुनागोदावरीगोमतिगीगाधारगयाप्रयावदरीवारानसिखिबुध ॥ येवासेतुसरस्वतिप्रभृतयेवस्नागड
 भारोडादयेतीर्थहाननयहृश्रकोटिमुगिानमश्रीचक्रयादोदकं म ॥ १ ॥ अथतयरा ॥ वे ॥ श्रीतिषेतासनखाभवभयहररा
 भैरवामत्रमूर्तिवशिष्टचरडीशनाथपरागतपरिणयलालोकपालापरिणदा ॥ यक्षारक्षासिंदेत्या पितृगणासहितामानरु
 शेनपालायोगिन्योगायुक्ताख्यलजलखचरापानमेतत्पितृ ॥ ॥ ॥ ॥ अष्टाविंशतिक्रमोद्धारमष्टाविंशतिम
 दलानमस्तैवकवर्तित्वनमस्तैपरमेश्वर ॥

श्रीगणेशाय नमः॥ **॥ येज ॥** धूपितप्रेतासनस्थो भवभयहरणो भैरवो मंत्र
नृत्तिचराडीचराडीशनाथः परागतफुरिगफुराणां लोकपालाफुरिगइ॥ य
क्षारक्षासिदैत्यापितृगणासहितामातरक्षेत्रपालायोगिन्योयोगयुक्तास्थ
लजलखचरापानमेतत्पिवंतु॥ पिवंतु देवतासर्वसरुद्राश्विनाएका
जोगिनीक्षेत्रपालाश्चममदेहव्यवस्थिता॥ **॥ योयला ॥** अष्टाविंशतिक्रमो

द्वारमष्टाविंशतिमण्डली॥ नमस्ते चक्रवर्ति त्वं नमस्ते परमेश्वरं॥ अष्टा
ष्टकैवदु कानी योगिणीनां तथैव च॥ भैरवं च ईशं च क्रमेकाकारे नमाम्य
हं॥ **॥ योयला ॥** अविनाशो भवेद्देहश्च जलामरमेव च॥ रोगशोकभयनास्ति रा
ज्यश्रीसुखसंपद॥ **॥ योयला ॥** मत्स्यमीलमाहामास्यभीक्तव्यं जनकं च रु
गसर्वद्वीपावलोकतु करुणालीशानमोस्तुते॥ **॥ यमय ॥** जयन्ति देव्या हरयादप

कंजेषसन्नवामामृतमोक्षदायकं । अनन्तसिद्धान्तमतिप्रबोधकं नमः
मित्राष्टाष्टकयोगिणीगरी ॥ योगिनीचक्रमध्यस्थं मातृमण्डलवेष्टितं
नमामि सिरसानार्धभैरवं भैरवी प्रीये ॥ आपद्दुर्गितान् रोगान् त
मया चारुतघना ॥ सर्वान च मे व्यपोहन्तु दिव्यचक्रसंभरना ॥ संपुज्य
कानी प्रतियात्त कानी जिति द्रयानी च तं बोधनानी देसस्य राजस्य कुलस्य

राणी करोति सांति भवो न कुजे स ॥ यो सा माज्ञापभावेन संस्थितं भुवः
न चर्य ॥ नमस्ताभ्यो नमस्ताभ्यो योगिनीभ्यो निरंतरं ॥ नन्दन्तु कुलयोगि
न्यो नन्दन्तु कुलभैरवा ॥ नन्दन्तु ये कुलाचार्ये ये चान्यकुलदिक्षता ॥
देहि न सुखि न संतु सुखि न संतु देहवत् ॥ प्रसादान् नमस्या मिचरणी
जीवधारणी ॥ ॥ स्नानकाय ॥ ॥ गंगा पुस्करनर्मदा च यमुना ॥

गोदावरीगोमति। गंगाद्वारगयाप्रयागवदरीवारानसिसीमुख॥ रेवासेतु
सरस्वतिपमृतयेवत्ताराडभारुडोदरेतीर्थहाराणसहश्रकोटिफल
दे श्रीचक्रपादोदकम्॥ ॥ स्नान ॥ गंगाभासलित्श्रेष्ठनाम्नापापप्र
नासनं॥ पूतकृयाप्रयुक्तानां ह्यनामार्थतेसूत्रोच्यताम्॥ सुराशक्तिशिवमि
सतत्समित्यसमूहमम्॥ रिद्धिरिद्धिप्रदं पूज्यमरिहो नंददाम्यहम्॥ चे

त॥ ईदंमलयसंभूतचंदनेहिमशीतली॥ वीरजाक्षेत्रचिद्रेतलऊर्ग
नममसिद्धये॥ सिद्धर॥ पुराडवर्द्धनक्षत्रस्यलाहर्नवीरभूषणी॥ गृहा
नवीरवीरेशसिद्धिर्वर्गदायकम्॥ जजमका॥ उपवीतमिदं सूत्रमरु
क्षस्यलाहर्न॥ गृहानवीरजागस्यफलं प्राप्तेजजोमम॥ अक्षत॥ अक्ष
तंसर्ववीरसर्वीरभाववरपदं॥ सर्वमंगलदानित्वंगृहाणपरमेश्वरी॥ स्वा

न ॥ नानापुष्पसुगंधानीमारुतीकुसुमोदये ॥ लोभाग्नसिद्धिर्दभदेपुष्पा
रोहनमूत्रमं ॥ कालाविततथापुष्पैर्पंचवर्णासुसोभितः विचित्रगंधि
तामालागृहाणापरमेश्वरी ॥ कुङ्कुमिडकोर्मवद्धचिन्तामणिमुमूत्रमं
स्मनोमन्यादिदेवेशिषत्रिचैषतिगृह्यताम् ॥ ~~चक्रमं ॥ फलादि ॥ फले~~
फलादितामुलमिष्टकेलासमुद्रवम् ॥ अज्ञेडाडिचपक्वानाजाविरा

दिषगृह्यताम् ॥ अन्न ॥ अन्नं महारसं दिव्यं रसेव द्रिप्तमन्वीत ॥ म
यानिवेदितं तुल्यं गृह्यताम् परमेश्वरीम् ॥ ~~चक्रमं ॥ अगुरिगुगूतश्चैव~~
कर्पूरं मृगनामया ॥ उपवासी च सर्वे वाधूपोयं प्रतिगृह्यताम् ॥ ~~दी~~
~~प ॥ सूपकासप्रदं दीपं सर्वत्र स्तिमिरापहम् ॥ सवास्यास्यं तरं ज्योति~~
दिपोयं प्रतिगृह्यताम् ॥ ~~लाजादिपर्व ॥~~ ॥ जावेद्वाभास्करस्य प्रभव

तुमवता जावदाकासगंगा ॥ जावद्भोगोगरगा ॥ गगरागरा पति शोपति
चोगरोगा ॥ जावद्द्विधा पिनाकी हरिकमलजल वेद सिद्धीतवानि ता
वत्वं पूजयेत् ॥ स्वजनपतिवृत्ता कर्दति राजलक्ष्मी ॥ ईहोपहाच्चन
सप्ततिस्थावरदाभवंतु ॥ ~~आविदेक~~ ॥ ॥ उकारो धृत्यपादो ह्रमक्षमल
मुजावोपरश्चासीर्लिंग वायुव्याधौ जिनाखशशिसकलकरा विन्दुना

दोर्द्धजुठ निजितर्गगा विधारा ॥ जुपरमकरा भैरवो मंत्रमूर्तिपायेद
वोनवात्मा ॥ सकलभयहरो भैरव श्रीकुजेश ॥ ~~तर्पण~~ ॥ ॥ अथमूल
स्थानार्चनी ॥ नवात्मान्यास सर्ववड ॥ अघोरन्यास ॥ ऐं परद्रुद्रपेरुः अस्त्राय
फट् ॥ ऐं पर अघोरे हौं श्रीगुह्याभ्यां नमः पापू ॥ ऐं पर धोरे ह्रीं तर्जनीभ्यां
पापू ॥ ऐं पर धोर धोरन्तरे हूं मध्यमाभ्यां पापू ॥ ऐं पर हूं प्रैं सर्वतः सर्वसर्वे

हैं अनामिकाभ्यां पापू ॥ ऐं प्र हैं जुं म४ हों कनिष्ठाभ्यां पापू ॥ ऐं अरुद्ररूपे ह४
कारतलपृष्ठाभ्यां अस्त्राय फट् ॥ ॥ ऐं प अघोर हों हृदयाय नमः पापू ॥ ऐं प
अघोर हों शिरसे स्वाहा पापू ॥ ऐं प्र अघोर घोर न्तरे हों शिखायै वषट् पापू ॥ ऐं प्र हूं
फें सर्वत सर्व सर्व हें के वचाय हूं ॥ ऐं प्र हूं जुं म४ हों नैत्रत्रयायै वौषट् पापू ॥
ऐं अरुद्ररूपे ह४ अस्त्राय फट् ॥ ॥ बीजपञ्चकन्यास ॥ ऐं अ ललाटे पापू ॥ ऐं अ

करेठे पापू ॥ ऐं अ उं मुखे पापू ॥ ऐं अ ऐं गुह्ये पापू ॥ ऐं अ ओं पादद्वये पापू ॥ प्र
णवत्प्रास ॥ ऐं हृदयाय नमः पापू ॥ ह्रीं शिरसे स्वाहा पापू ॥ श्रीं शिखायै वषट् पापू
॥ ह्रूं के वचाय हूं पापू ॥ ह्रौं नैत्रत्रयायै वौषट् पापू ॥ ऐं अ अस्त्राय फट् ॥ ॥
पूजन ॥



लाहातसिनात्र॥ चन्दनादिछायश्लोकबोहात्र॥ चन्दनसिंदुरअक्षतछाय॥ धूपसो
धनी॥ ऐं॥ हसरपरमानन्दिनीकवचायऐं॥ बंध्यनुमुद्रा॥ द्वागठपूजा॥ ह्रीसिद्ध
विद्यावय्येधन्येनमः॥ द्वागठथाहात्रधूपधने॥ वनस्पतिरसोत्पन्ननानागन्धेषु
रितं॥ आहुतायसर्वदेवानाधूपार्यप्रतिगृह्यतां॥ ॥ दीपशोधन॥ ऐं॥ ऐं॥ ऐं॥ ऐं॥
ऐं॥ ज्योतिरुपेशियार्येऐं॥ बंध्यनुमुद्रा॥ ॥ मन्त्रविया॥ सप्रकाशमाहादीपसर्व

त्रतिमिरापहं॥ सवाह्याभ्यन्तरं ज्योतिदीपार्यप्रतिगृह्यतां॥ ॥ नैव्यय॥ अर्चनं
तुर्विधं चैवरसेषु द्विसमन्वीतं॥ मयानिवेदितं तुभ्यं गृहाणाय मे श्वरी॥ ॥ फ
लताम्वरादि॥ फलफलादिताम्वलमिष्टुकेलादिसर्वश॥ आम्रदाडिम्वपकान्नं
जाम्बिरादिप्रगृह्यतां॥

गाँहृदयादिन्यासः॥ मृशासनायपापू॥ ऐं गाँगीर्गैर्गौंगः ग्लौंगमुं
श्रीगणाधिपतये प्रमोदाय गीशक्तिमहिताय पापू॥ वलि॥ ग
जमद्रा॥ ॥ माँहृदयादिन्यासः॥ सिंहासनायैपापू॥ ऐं माँमीमू
मूँ शिं महालक्ष्म्यैपापू॥ वलि॥ खड्गमद्रा॥ ॥ क्राँहृदयादिन्या
य सः॥ सिंहासनायैपापू॥ ऐं क्राँ श्रीर्वैष्णवा मूँ क्राँ श्रीश्री
नेश्वर्यैपापू॥ वलि॥ योनिध्वपनुमद्रा॥ ॥







ASHA ARCHIVES

3272

४९ निर्याचन विधि

॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥